International Journal of Sanskrit Research 2015; 1(2): 100-102

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2015; 1(2): 100-102
© 2015 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 25-11-2014
Accepted: 28-12-2014

डॉ. अशोक कुमार झा
व्याख्याता- व्याकरण शास्त्र, राजकीय धूलेश्वर आचार्य संस्कृत महाविद्यालय, मनोहरपुर, जयपुर, राजस्थान, भारत

Corresponding Author:
डॉ. अशोक कुमार झा
व्याख्याता- व्याकरण शास्त्र, राजकीय धूलेश्वर आचार्य संस्कृत महाविद्यालय, मनोहरपुर, जयपुर, राजस्थान, भारत

"अदसो मात्" सूत्र की समीक्षा

डॉ. अशोक कुमार झा

प्रस्तावना

(संज्ञा सूत्र) अदसो मात्- 1/1/12

विभक्ति, वचन-निर्देश- अदसः- 6/1[1], मात्- 5/1[2]।

1. 'अदसः' में अवयवावयविभाव सम्बन्ध में षष्ठी विभक्ति है।
2. दिग्योग में अर्थात् दिशावाचक 'पर' शब्द के योग में "अन्यारादितरर्तेदिक्शब्दाञ्चूत्तरपदाजाहियुक्ते"[1] सूत्र से पञ्चमी विभक्ति हुई है।

सन्धि-विच्छेद- अदसो मात्= अदसस्[षत्व]+मात् ("ससजुषो रुँः"[2]- स्<रुँ, "उपदेशेऽजनुनासिक इत्"[3] एवं "तस्य लोपः"[4]- रुँ<र्, "हशि च"[5]- र्<उ, "आद् गुणः"[6]- अ+उ<ओ)।

अनुवृत्ति- ईदूदेद्द्विचनं प्रगृह्यम्[7]- 1/1/11- ईदूत्, प्रगृह्यम्।
वृत्ति- अस्मात् परावीदूतौ प्रगृह्यौ स्तः। अमी ईशाः। रामकृष्णावमू आसाते। मात् किम्? अमुकेऽत्र।
अर्थ- 'अदस्' शब्द के अवयवभूत 'म्' से परे ईत् (ई) एवं ऊत् (ऊ) की प्रगृह्य संज्ञा होती है।
नोट- 'अदस्' सर्वनाम शब्द है। इसका प्रयोग दूर स्थित पदार्थों के निर्देश के लिए होता है। जैसे- असौ बालकः (वह लड़का है) आदि। इसका तीनों लिङ्गों में प्रयोग होता है। जैसे- असौ, अमू, अमी आदि (पुल्लिङ्ग में)। असौ, अमू, अमूः इत्यादि (स्त्रीलिङ्ग में)। अदः, अमू, अमूनि आदि (नपुंसकलिङ्ग में)।

विशेष- 1. 'अदस्' शब्द के 'म्' से परे 'अमीभ्यः', 'अमूभ्याम्', 'अमीषाम्' इत्यादि में 'ईत्', 'ऊत्' स्थित हैं, किन्तु प्रगृह्य संज्ञा करने का यहाँ कोई उपयोग नहीं है, क्योंकि प्रगृह्य संज्ञा स्वर सन्धि के निषेध के लिए करनी होती है, परन्तु 'भ्यः', 'भ्याम्' आदि का व्यवधान होने से सन्धि प्राप्त नहीं हो पाती है, जिससे "अदसो मात्" सूत्र की यहाँ प्रसक्ति नहीं होती है, इसलिए "अदसो मात्" सूत्र के लिए उपयोगी शब्द 'अमू' तथा 'अमी' ही है।

अमी[8] ईशाः- ये स्वामी हैं।
अमी+ईशाः
अमी+ईशाः 'अमी' (अदस् मूल शब्द वाला) के 'म्' से परे स्थित 'ई' (ईत्) की "अदसो मात्" सूत्र से प्रगृह्य संज्ञा 'प्रगृह्य' संज्ञा[1] हुई।

---

[1] पाणनीय अष्टाध्यायी सूत्रपाठः- 2/3/29
[2] पाणनीय अष्टाध्यायी सूत्रपाठः- 8/2/66
[3] पाणनीय अष्टाध्यायी सूत्रपाठः- 1/3/2
[4] पाणनीय अष्टाध्यायी सूत्रपाठः- 1/3/9
[5] पाणनीय अष्टाध्यायी सूत्रपाठः- 6/1/114
[6] पाणनीय अष्टाध्यायी सूत्रपाठः- 6/1/87
[7] पाणनीय अष्टाध्यायी सूत्रपाठः- 1/1/11
[8] प्रथमा विभक्ति, बहुवचन

अमी+ईशाः	"प्लुतप्रगृह्या अचि नित्यम्"[9] सूत्र से 'अमी' में प्रगृह्यसंज्ञक मकारोत्तर (म्+ई) 'ई' को प्रकृतिभाव हो गया, 'ईशाः' का 'ई' अच् परे रहते, जिससे "अकः सवर्णे दीर्घः"[10] सूत्र से अक् (ई) से पर सवर्ण 'ई' अच् परे रहते, पूर्व एवं पर के स्थान पर 'ई' सवर्णदीर्घ एकादेश नहीं हुआ।
अमी ईशाः	यथास्थिति बनी रही।

रामकृष्णावमू[11] आसाते[12]- वे दोनों बलराम एवं कृष्ण बैठे है।

रामकृष्णावमू+आसाते	
रामकृष्णावमू+आसाते	'अमू' (अदस् मूल शब्द वाला) के 'म्' से परे स्थित 'ऊ' (ऊत्) की "अदसो मात्" सूत्र से
प्रगृह्य संज्ञा	'प्रगृह्य' संज्ञा[2] हुई।
रामकृष्णावमू+आसाते	"प्लुतप्रगृह्या अचि नित्यम्" सूत्र से 'अमू' के प्रगृह्यसंज्ञक मकारोत्तर (म्+ऊ) 'ऊ' को प्रकृतिभाव हो गया, 'आसाते' का 'आ' अच् परे रहते, जिससे "इको यणचि"[13] सूत्र से 'आसाते' का 'आ' अच् परे रहते, इक् (ऊ) के स्थान पर यण् (व्) आदेश नहीं हुआ।
रामकृष्णावमू[3] आसाते	यथास्थिति बनी रही।

1. अदस् शब्द से प्रथमा विभक्ति का बहुवचन 'जस्' प्रत्यय करने पर, 'जस्' में अनुबन्धलोप, 'जस्' (अस्) की विभक्ति संज्ञा[14], त्यदाद्यत्व[15], पररूप[16], 'जस्' (अस्) को 'शी' आदेश[17], 'शी' में अनुबन्धलोप[18], "आद्गुणः" से गुण एकादेश होकर 'अदे' रूप बनता है। इस अवस्था में "एत ईद् बहुवचने" से 'ए' को 'ई' तथा दकार को मकार होकर 'अमी' रूप सम्पन्न होता है। "पूर्वत्राऽसिद्धम्"[19] सूत्र के नियम से सपाद- सप्ताध्यायीस्थ "ईदूदेद्द्विवचनं प्रगृह्यम्" (1/1/11) सूत्र की दृष्टि में त्रिपादीस्थ "एत ईद् बहुवचने" (8/2/81) सूत्र असिद्ध हो जाता है, अतः "ईदूदेद्द्विवचनं प्रगृह्यम्" सूत्र को 'अमी' के स्थान पर 'अदे' दिखाई देता है। 'अदे' का 'ए' व्यपदेशिवद्भाव से एदन्त तो है, परन्तु द्विवचन नहीं, बहुवचन है, अतः "ईदूदेद्द्विवचनं प्रगृह्यम्" सूत्र प्रसक्त नहीं हो पाता, इसलिए अलग से "अदसो मात्" सूत्र बनाना पड़ा। यदि सपादसप्ताध्यायीस्थ "अदसो मात्" (1/1/12) सूत्र की दृष्टि में भी त्रिपादीस्थ "एत ईद् बहुवचने" (8/2/81) सूत्र असिद्ध हो जाता है, तो यह सूत्र व्यर्थ हो जायेगा, क्योंकि इसे 'अदस्' के 'म्' से परे 'ईत्', 'ऊत्' कहीं नहीं मिलेगें, अतः सूत्र की सार्थकता को देखते हुए "अदसो मात्" सूत्र की दृष्टि में "एत ईद् बहुवचने" सूत्र असिद्ध नहीं होता है, इसलिए 'अमी' में 'म्' से परे 'ई' की "अदसो मात्" सूत्र से प्रगृह्य संज्ञा हो जाती है।

2. 'अदस्' शब्द से 'औ' विभक्ति लाने पर 'औ' की विभक्ति संज्ञा, 'स्' को अकारादेश, पररूप विधान तथा वृद्धि एकादेश[20] करने पर 'अदौ' रूप बना। "अदसोऽसेर्दादु दो मः" सूत्र से 'द्' को 'म्' आदेश तथा 'औ' को 'ऊ' होकर 'अमू' रूप बनता है। इस प्रकार 'अमू' के 'ऊ' के व्यपदेशिवद्भाव से ऊदन्त तथा परादिवद्भाव से द्विवचन रूप होने से "ईदूदेद्द्विवचनं प्रगृह्यम्" सूत्र से प्रगृह्य संज्ञा हो सकती थी, परन्तु "अदसोऽसेर्दादु दो मः" सूत्र से किये गये 'द्' को 'म्' आदेश तथा 'औ' को 'ऊ' विधान के असिद्ध होने से "ईदूदेद्द्विवचनं प्रगृह्यम्" सूत्र को 'अमू' के स्थान पर 'अदौ' रूप ही दिखाई देता है, क्योंकि "पूर्वत्राऽसिद्धम्" सूत्र के नियम से सपादसप्ताध्यायीस्थ "ईदूदेद्द्विवचनं प्रगृह्यम्" (1/1/11) सूत्र की दृष्टि में त्रिपादीस्थ "अदसोऽसेर्दादु दो मः" (8/2/80) सूत्र असिद्ध हो जाता है, अतः ऐसी स्थिति में प्रगृह्य संज्ञा करने के लिए "अदसो मात्" सूत्र बनाया गया है। "अदसो मात्" सूत्र के आरम्भ सामर्थ्य से "अदसोऽसेर्दादु दो मः" सूत्र "अदसो मात्" (1/1/12) सूत्र की दृष्टि में असिद्ध नहीं होता है।

3. 'रामकृष्णावमू' पद का सन्धि विच्छेद है- 'रामकृष्णौ+अमू' यहाँ "एचोऽयवायावः"[21] सूत्र से 'अमू' का 'अ' अच् परे रहते, 'रामकृष्णौ' का 'औ' एच् को क्रमशः 'आव्' आदेश होकर 'रामकृष्णावमू' प्रयोग बनता है। यहाँ सन्धि विच्छेद में 'रामकृष्णौ' पद को देखने से स्पष्ट है कि यहाँ पुल्लिङ्गवाची 'अमू' पद का ग्रहण है, न कि स्त्रीलिंगवाची तथा नपुंसकलिंगवाची पदों का, क्योंकि स्त्रीलिंग के प्रसंग में 'अदस्' शब्द से परे प्रथमा तथा द्वितीया विभक्ति के द्विवचनों में क्रमशः 'औ' तथा 'औट्' प्रत्यय करके, विभक्ति संज्ञा, अत्वादेश, पररूप कार्य, टाप् प्रत्यय[22], 'औ' को 'शी' आदेश तथा गुणादेश कार्य करने पर 'अदे' रूप बनता है। "अदसोऽसेर्दादु दो मः" सूत्र से 'अदे' में 'द्' को 'म्' आदेश एवं 'ए' को 'ऊत्व' विधान करके 'अमू' प्रयोग सिद्ध होता है। "पूर्वत्राऽसिद्धम्" सूत्र के नियम से सपादसप्ताध्यायीस्थ "ईदूदेद्द्विवचनं प्रगृह्यम्" (1/1/11) सूत्र की दृष्टि में त्रिपादीस्थ "अदसोऽसेर्दादु दो मः" (8/2/80) सूत्र असिद्ध हो जाने से "ईदूदेद्द्विवचनं प्रगृह्यम्" सूत्र को मूल रूप से 'अदे' पद दिखाई देगा, 'अदे' का 'ए' व्यपदेशिवद्भाव से एदन्त एवं परादिवद्भाव से द्विवचन है, इसलिए 'अदे' के 'ए' की "ईदूदेद्द्विवचनं प्रगृह्यम्" सूत्र से प्रगृह्य संज्ञा हो सकती है, इसके लिए "अदसो मात्" सूत्र की आवश्यकता नहीं है। इसी प्रकार नपुंसकलिंग में 'अदस्' शब्द से 'औ' प्रत्यय करने पर विभक्ति संज्ञा, अत्वादेश, पररूप कार्य, 'औ' को 'शी' आदेश, गुणादेश कार्य करने पर 'अदे' रूप बनता है, तदनन्तर "अदसोऽसेर्दादु दो मः" सूत्र से 'अदे' में 'द्' को 'म्' आदेश एवं 'ए' को 'ऊत्व' विधान करके 'अमू' प्रयोग सिद्ध होता है। "पूर्वत्राऽसिद्धम्" सूत्र के नियम से सपादसप्ताध्यायीस्थ "ईदूदेद्द्विवचनं प्रगृह्यम्" (1/1/11) सूत्र की दृष्टि में त्रिपादीस्थ "अदसोऽसेर्दादु दो मः" (8/2/80) सूत्र असिद्ध हो जाने से "ईदूदेद्द्विवचनं प्रगृह्यम्" सूत्र को मूल रूप से 'अदे' पद दिखाई देगा, 'अदे' का 'ए' व्यपदेशिवद्भाव से एदन्त एवं परादिवद्भाव से द्विवचन है, इसलिए 'अदे' के 'ए' की "ईदूदेद्द्विवचनं प्रगृह्यम्" सूत्र से प्रगृह्य संज्ञा हो सकती है, इसके लिए "अदसो मात्" सूत्र की आवश्यकता नहीं है। अतः स्पष्ट है कि केवल पुल्लिङ्गवाची के 'अमू' तथा 'अमी' पदों के लिए "अदसो मात्" सूत्र बनाया गया है, स्त्रीलिंग एवं नपुंसकलिंग के पदों के लिए नहीं।

प्रत्युदाहरण- मात् किम्? अमुकेऽत्र- "अदसो मात्" सूत्र में 'मात्' का ग्रहण क्यों किया गया है? क्योंकि 'म्' के अतिरिक्त अन्य किसी वर्ण से परे ईत् (ई) एवं ऊत् (ऊ) 'अदस्' के तीनों लिङ्गों में प्रयुक्त नहीं होते, अतः 'मात्' का ग्रहण न होने से भी 'अमू', 'अमी' में क्रमशः 'ऊ' तथा 'ई' की ही प्रगृह्यसंज्ञा हो पाती है। इसका समाधान है कि "अदसो मात्" सूत्र में मात् ग्रहण न होने पर अमुकेऽत्र यहाँ 'क्' (यहाँ "तन्मध्यपतितस्तद्ग्रहणेन गृह्यते"[23] इस परिभाषा के बल पर अदकस् भी अदस् शब्द ही माना जाता है।) से परे रहते हुए भी 'ए' की "अदसो मात्" सूत्र से प्रगृह्य संज्ञा हो जायेगी, जिससे "एङः पदान्तादति"[24] सूत्र की प्रसक्ति नहीं हो पायेगी, अपितु प्रगृह्य संज्ञा होने के कारण प्रकृतिभाव होने से अनिष्ट प्रयोग की सिद्धि होने लगेगी, अतः अनिष्ट प्रयोग सिद्ध न हो, इसके लिए "अदसो मात्" सूत्र में 'मात्' पद का ग्रहण आवश्यक है।

---

[9] पाणनीय अष्टाध्यायी सूत्रपाठः- 6/1/125

[10] पाणनीय अष्टाध्यायी सूत्रपाठः- 6/1/101

[11] प्रथमा विभक्ति, द्विवचन

[12] प्रथम पुरुष, द्विवचन

[13] पाणनीय अष्टाध्यायी सूत्रपाठः- 6/1/77

[14] विभक्तिश्च- 1/4/104

[15] त्यदादीनामः- 7/2/102

[16] अतो गुणे- 6/1/97

[17] जशः शी- 7/1/17

[18] लशक्वतद्धिते- 1/3/8

[19] पाणनीय अष्टाध्यायी सूत्रपाठः- 8/2/1

[20] वृद्धिरेचि- 6/1/88

[21] पाणनीय अष्टाध्यायी सूत्रपाठः- 6/1/78

[22] अजाद्यतष्टाप्- 4/1/4

[23] श्री-विश्वनाथमिश्रस्य 'सुबोधिनी' हिन्दीव्याख्योपेते परिभाषेन्दुशेखरे, मूले

[24] पाणनीय अष्टाध्यायी सूत्रपाठः- 6/1/109

विशेष- "ईदूदेद्द्विवचनं प्रगृह्यम्" सूत्र से यहाँ 'ईत्', 'ऊत्' एवं 'एत्' इन तीनों की अनुवृत्ति आती थी, परन्तु इस सूत्र में 'मात्' ग्रहण के सामर्थ्य से 'एत्' का अनुवर्त्तन नहीं हो पाता है, क्योंकि 'म्' से परे 'अदस्' शब्द में कहीं 'एत्' (ए) प्राप्त ही नहीं होता है। यदि यहाँ 'मात्' का ग्रहण नहीं करेंगे, तो 'एत्' की भी अनुवृत्ति आ जाने से अमुकेऽत्र में 'म्' से भिन्न 'क्' से पर 'ए' की प्रगृह्य संज्ञा एवं प्रकृतिभाव होने से सन्धि कार्य नहीं हो पायेगा, अतः 'एत्' की अनुवृत्ति को रोकने के लिए 'मात्' का ग्रहण आवश्यक है- "असति माद्ग्रहणे एकारोप्यनुवर्त्तेत।" [सि0 कौ0]

निष्कर्ष

उपर्युक्त प्रकार से अदसो मात् सूत्र का विस्तार से विभिन्न सूत्रों (अधिकार सूत्र, विधि सूत्र) के आलोक समीक्षा की गई। इस प्रकार का समीक्षात्मक ज्ञान न केवल व्याकरण के छात्रों के लिए अपितु सभी संस्कृत के छात्रों के लिए लाभदायक होगा।

सन्दर्भ-पुस्तकानि

1. श्री-विश्वनाथमिश्रस्य 'सुबोधिनी' हिन्दीव्याख्योपेतः परिभाषेन्दुशेखरः प्रकाशक- चौखम्भा संस्कृत प्रकाशन, वाराणसी। पुनर्मुद्रित संस्करण- 2009
2. बालमनोरमा-तत्त्वबोधिनीसहिता वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी प्रकाशक- मोतीलाल बनासीदास, दिल्ली, वाराणसी, पटना पुनर्मुद्रण दिल्ली, 1979
3. अष्टाध्यायी सूत्रानुक्रमणिका (App) Directed by- Prof. M. M. Jha Developed by- Srujan Jha
4. श्री-विश्वनाथमिश्रस्य 'सुबोधिनी' हिन्दीव्याख्योपेतः पञ्चसन्धयन्तः लघुशब्देन्दुशेखरः प्रकाशक- चौखम्भा संस्कृत प्रतिष्ठान, दिल्ली। पुनर्मुद्रित संस्करण-2008
5. व्याकरण-महाभाष्य अनुवादक एवं विवरणकार- चारुदेव शास्त्री प्रकाशक- मोतीलाल बनासीदास, दिल्ली, वाराणसी, पटना, बंगलौर, मद्रास पुनर्मुद्रण- 1995
6. भैमीव्याख्या-सहिता लघुसिद्धान्तकौमुदी प्रथम भाग भीमसेन शास्त्री प्रकाशक- नचिकेता भाटिया, 18/99, गीता कालोनी, दिल्ली- 110031 पञ्चम संस्करण- 2007